

भारत-रूस संबंधों की बदलती गतिशीलता: यूक्रेन युद्ध के संदर्भ में

प्रीति¹, प्रोफेसर राम दर्शन²

¹शोधार्थी, राजनीतिराजनीतिक विज्ञान एवं लोक प्रशासन विभाग, बाबा मस्तनाथ विश्वविद्यालय, रोहतक।

²शोध निर्देशक, राजनीतिराजनीतिक विज्ञान एवं लोक प्रशासन विभाग, बाबा मस्तनाथ विश्वविद्यालय, रोहतक।

DOI: <https://doi.org/10.64880/theresearchdialogue.v5i3.19>

ARTICLE DETAILS

सारांश

Research Paper

Received: 12-09-2026

Accepted: 18-10-2026

Published: 26-10-2026

Corresponding Author:

प्रीति

बीज शब्द: भारत-रूस संबंध, रूस-यूक्रेन युद्ध, रणनीतिक स्वायत्तता, ऊर्जा सुरक्षा, रक्षा सहयोग, विदेश नीति, भू-राजनीति।

OPEN ACCESS

प्रस्तुत शोध-पत्र में रूस-यूक्रेन युद्ध के संदर्भ में भारत-रूस संबंधों की बदलती गतिशीलता का राजनीतिक, आर्थिक, सामरिक एवं कूटनीतिक दृष्टिकोण से विश्लेषण किया गया है। अध्ययन का प्रमुख उद्देश्य रूस-यूक्रेन युद्ध के पश्चात भारत-रूस संबंधों में उत्पन्न निरंतरता एवं परिवर्तन का मूल्यांकन करना तथा भारत की रणनीतिक स्वायत्तता, ऊर्जा सुरक्षा, रक्षा सहयोग और राष्ट्रीय हितों पर इसके प्रभावों को स्पष्ट करना है। अध्ययन में भारत-रूस संबंधों की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि, द्विपक्षीय रणनीतिक साझेदारी, रक्षा उपकरणों की आपूर्ति, रियायती रूसी कच्चे तेल के आयात तथा पश्चिमी देशों द्वारा लगाए गए आर्थिक प्रतिबंधों के प्रभावों का विवेचन किया गया है। इसके अतिरिक्त भारत की संतुलित विदेश नीति, बहुपक्षीय सहयोग तथा शांतिपूर्ण संवाद के प्रति प्रतिबद्धता का विश्लेषण किया गया है। अध्ययन से स्पष्ट होता है कि रूस-यूक्रेन युद्ध ने भारत-रूस संबंधों को समाप्त करने के बजाय उनकी प्राथमिकताओं और कार्यप्रणाली में महत्वपूर्ण परिवर्तन उत्पन्न किए हैं। निष्कर्षतः भारत अपनी ऐतिहासिक साझेदारी को बनाए रखते हुए रक्षा एवं व्यापारिक विविधीकरण, ऊर्जा सुरक्षा और रणनीतिक स्वायत्तता के माध्यम से बदलती वैश्विक परिस्थितियों में अपने राष्ट्रीय हितों का संरक्षण करने का प्रयास कर रहा है।

भूमिका:

इक्कीसवीं सदी में अंतरराष्ट्रीय राजनीति निरंतर परिवर्तन के दौर से गुजर रही है। वैश्वीकरण, आर्थिक परस्पर निर्भरता, सैन्य प्रतिस्पर्धा, क्षेत्रीय संघर्षों और महाशक्तियों के बीच बढ़ते तनाव ने विश्व व्यवस्था को अधिक जटिल बना दिया है। शीत युद्ध की समाप्ति के बाद यह उम्मीद की गई थी कि अंतरराष्ट्रीय संबंधों में सहयोग, शांति और आर्थिक विकास को अधिक महत्व मिलेगा। हालाँकि, बदलती भू-राजनीतिक परिस्थितियों, महाशक्तियों के बीच बढ़ती प्रतिस्पर्धा और विभिन्न क्षेत्रों में उत्पन्न होने वाले संघर्षों ने अंतरराष्ट्रीय व्यवस्था को एक बार फिर अनिश्चितता की स्थिति में पहुँचा दिया है। इसी संदर्भ में रूस और यूक्रेन के बीच संघर्ष आधुनिक विश्व राजनीति की एक महत्वपूर्ण घटना के रूप में उभरा है, जिसने

न केवल यूरोप की सुरक्षा व्यवस्था को प्रभावित किया है, बल्कि वैश्विक अर्थव्यवस्था, ऊर्जा बाजार, खाद्य सुरक्षा, सैन्य सहयोग और विभिन्न देशों की विदेश नीति को भी व्यापक रूप से प्रभावित किया है।

24 फरवरी 2022 को रूस द्वारा यूक्रेन पर पूर्ण पैमाने पर सैन्य आक्रमण किए जाने के बाद अंतरराष्ट्रीय राजनीति में एक नया मोड़ आया। इस युद्ध ने रूस और पश्चिमी देशों, विशेषकर अमेरिका तथा यूरोपीय संघ के बीच पहले से मौजूद तनाव को और अधिक गहरा कर दिया। पश्चिमी देशों ने रूस पर अनेक आर्थिक प्रतिबंध लगाए, उसकी वित्तीय गतिविधियों पर नियंत्रण स्थापित करने का प्रयास किया और यूक्रेन को आर्थिक, सैन्य तथा मानवीय सहायता प्रदान की। दूसरी ओर, रूस ने अपनी सुरक्षा संबंधी चिंताओं और भू-राजनीतिक हितों को इस संघर्ष के प्रमुख कारणों के रूप में प्रस्तुत किया। परिणामस्वरूप, यह युद्ध केवल रूस और यूक्रेन के बीच क्षेत्रीय संघर्ष तक सीमित नहीं रहा, बल्कि इसने वैश्विक शक्ति-संतुलन, अंतरराष्ट्रीय संस्थाओं की भूमिका और वर्तमान विश्व व्यवस्था की प्रकृति से जुड़े अनेक प्रश्न उत्पन्न किए। इस संघर्ष का प्रभाव भारत जैसे उभरते हुए वैश्विक शक्ति-केंद्र पर भी स्पष्ट रूप से दिखाई दिया। भारत विश्व की प्रमुख अर्थव्यवस्थाओं में से एक है और अंतरराष्ट्रीय राजनीति में उसकी भूमिका लगातार महत्वपूर्ण होती जा रही है। एक ओर भारत के अमेरिका, यूरोप, जापान और ऑस्ट्रेलिया जैसे देशों के साथ आर्थिक, तकनीकी, सामरिक तथा रक्षा संबंध मजबूत हुए हैं, वहीं दूसरी ओर रूस के साथ उसके ऐतिहासिक, राजनीतिक, सैन्य और आर्थिक संबंध भी लंबे समय से भारतीय विदेश नीति का महत्वपूर्ण आधार रहे हैं। ऐसी स्थिति में रूस-यूक्रेन युद्ध ने भारत के सामने एक जटिल कूटनीतिक चुनौती प्रस्तुत की। भारत को एक ओर अंतरराष्ट्रीय कानून, राष्ट्रीय संप्रभुता, क्षेत्रीय अखंडता और शांतिपूर्ण विवाद समाधान के सिद्धांतों के प्रति अपनी प्रतिबद्धता बनाए रखनी थी, जबकि दूसरी ओर उसे रूस के साथ अपने पारंपरिक संबंधों, रक्षा संबंधी आवश्यकताओं, ऊर्जा सुरक्षा और व्यापक राष्ट्रीय हितों की रक्षा भी करनी थी।

भारत और रूस के संबंधों की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि शीत युद्ध के दौर तक जाती है। स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद भारत ने गुटनिरपेक्षता की नीति अपनाई, जिसका उद्देश्य किसी भी महाशक्ति गुट का स्थायी हिस्सा बने बिना स्वतंत्र विदेश नीति का संचालन करना था। इसके बावजूद सोवियत संघ के साथ भारत के संबंध समय के साथ अधिक घनिष्ठ होते गए। औद्योगिक विकास, वैज्ञानिक सहयोग, तकनीकी सहायता, रक्षा उत्पादन और अंतरराष्ट्रीय मंचों पर पारस्परिक समर्थन ने दोनों देशों के बीच विश्वास को मजबूत किया। वर्ष 1971 की भारत-सोवियत शांति, मैत्री और सहयोग संधि ने इस संबंध को एक नई दिशा प्रदान की। सोवियत संघ के विघटन के बाद भी भारत और रूस ने अपने द्विपक्षीय संबंधों को बनाए रखा और उन्हें बदलती अंतरराष्ट्रीय परिस्थितियों के अनुरूप विकसित करने का प्रयास किया। वर्ष 2000 में भारत और रूस के बीच रणनीतिक साझेदारी की स्थापना तथा 2010 में इसे विशेष और विशेषाधिकार प्राप्त रणनीतिक साझेदारी का दर्जा दिए जाने से दोनों देशों के संबंधों की निरंतरता और महत्व स्पष्ट होता है।

भारत-रूस संबंधों का सबसे महत्वपूर्ण आयाम रक्षा सहयोग रहा है। भारतीय सशस्त्र बलों के सैन्य उपकरणों, हथियार प्रणालियों, लड़ाकू विमानों, टैंकों, पनडुब्बियों और वायु रक्षा प्रणालियों में रूसी मूल के उपकरणों की लंबे समय से महत्वपूर्ण भूमिका रही है। इस ऐतिहासिक निर्भरता के कारण भारत के लिए रूस के साथ रक्षा संबंधों को अचानक समाप्त करना व्यावहारिक नहीं है। सैन्य उपकरणों के रखरखाव, कलपुर्जों की उपलब्धता, तकनीकी सहायता और रक्षा प्रणालियों की परिचालन क्षमता सुनिश्चित करने के लिए दोनों देशों के बीच सहयोग आवश्यक बना हुआ है। हालाँकि, समय के साथ भारत ने अपनी रक्षा खरीद में विविधता लाने, घरेलू रक्षा उत्पादन को बढ़ावा देने और अमेरिका, फ्रांस तथा अन्य देशों के साथ सैन्य सहयोग बढ़ाने की दिशा में भी कदम उठाए हैं। इसलिए यूक्रेन युद्ध के बाद भारत-रूस रक्षा संबंधों का अध्ययन केवल पारंपरिक मित्रता के आधार पर नहीं, बल्कि भारत की दीर्घकालिक सुरक्षा आवश्यकताओं और बदलती रक्षा रणनीति के संदर्भ में किया जाना चाहिए।

ऊर्जा सुरक्षा भी भारत-रूस संबंधों का एक प्रमुख आयाम बनकर उभरी है। भारत अपनी ऊर्जा आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए बड़े पैमाने पर कच्चे तेल और अन्य ऊर्जा संसाधनों का आयात करता है। रूस-यूक्रेन युद्ध के बाद पश्चिमी प्रतिबंधों और वैश्विक ऊर्जा बाजार में आए बदलावों ने भारत के लिए ऊर्जा आयात के नए अवसर और चुनौतियाँ दोनों उत्पन्न कीं। रूसी कच्चे तेल की खरीद में वृद्धि ने भारत को अपेक्षाकृत अनुकूल कीमतों पर ऊर्जा संसाधन प्राप्त करने का अवसर दिया। इससे भारत की ऊर्जा लागत, घरेलू बाजार और व्यापक आर्थिक हितों पर प्रभाव पड़ा। हालाँकि, इस व्यापार ने पश्चिमी देशों के साथ भारत के संबंधों, प्रतिबंधों से जुड़े जोखिमों, भुगतान व्यवस्थाओं और वैश्विक ऊर्जा बाजार में उसकी स्थिति को लेकर भी चर्चा को जन्म दिया। इस प्रकार, ऊर्जा व्यापार भारत की विदेश नीति में व्यावहारिकता और राष्ट्रीय हितों की प्राथमिकता का एक महत्वपूर्ण उदाहरण बन गया है।

अध्ययन के उद्देश्य:

1. यूक्रेन युद्ध के संदर्भ में भारत-रूस संबंधों में निरंतरता एवं परिवर्तन का विश्लेषण करना।
2. भारत की रणनीतिक स्वायत्तता तथा ऊर्जा, रक्षा और आर्थिक हितों पर यूक्रेन युद्ध के प्रभावों का अध्ययन करना।

साहित्यिक सर्वेक्षण:

1. पाटिल, आशा शिवाजी (2023): 'रूस-यूक्रेन युद्ध का भारतीय अर्थव्यवस्था पर प्रभाव', आशा शिवाजी पाटिल के इस शोध पत्र का मुख्य विषय रूस-यूक्रेन युद्ध का भारतीय अर्थव्यवस्था पर पड़ने वाला प्रभाव है। इस विषय के अंतर्गत कच्चे तेल की कीमतों में वृद्धि, महँगाई, खाद्य पदार्थों की आपूर्ति तथा अंतरराष्ट्रीय व्यापार में होने वाले परिवर्तनों का अध्ययन किया जा सकता है। युद्ध के कारण भारत के आयात-निर्यात, ऊर्जा सुरक्षा और आर्थिक विकास पर भी प्रभाव पड़ा। यह अध्ययन भारतीय अर्थव्यवस्था की वैश्विक परिस्थितियों पर निर्भरता को समझने में सहायक है। हालाँकि, इस शोध पत्र के वास्तविक निष्कर्षों की पुष्टि के लिए मूल शोध सामग्री का अध्ययन आवश्यक है।
2. सिंह, कर्नल अजय (2023): 'रूस-यूक्रेन संघर्ष और इसका वैश्विक प्रभाव', कर्नल अजय सिंह की इस पुस्तक का विषय रूस-यूक्रेन संघर्ष के व्यापक वैश्विक प्रभावों से संबंधित है। इस संदर्भ में युद्ध के राजनीतिक, आर्थिक, सैन्य और कूटनीतिक परिणामों का अध्ययन महत्वपूर्ण है। संघर्ष ने यूरोपीय सुरक्षा व्यवस्था, नाटो की भूमिका, वैश्विक ऊर्जा बाजार और खाद्य आपूर्ति को प्रभावित किया। इसके अतिरिक्त, युद्ध ने विभिन्न देशों के बीच शक्ति संतुलन तथा अंतरराष्ट्रीय संबंधों में नए समीकरण उत्पन्न किए। यह विषय समकालीन विश्व राजनीति और वैश्विक सुरक्षा चुनौतियों को समझने में सहायक है। हालाँकि, पुस्तक में लेखक द्वारा प्रस्तुत विशिष्ट तर्कों और निष्कर्षों का मूल्यांकन करने के लिए मूल पुस्तक का अध्ययन आवश्यक है।
3. कपूर, कुश्मिता (2025): 'यूक्रेन युद्ध के बाद भारत-रूस रक्षा संबंधों का पुनर्गठन', कुश्मिता कपूर के इस शोध पत्र का विषय यूक्रेन युद्ध के बाद भारत और रूस के रक्षा संबंधों में होने वाले परिवर्तनों से संबंधित है। इस विषय में भारत की रक्षा आवश्यकताओं, रूस से हथियारों की खरीद, सैन्य तकनीक के हस्तांतरण तथा रक्षा उपकरणों के रखरखाव का विश्लेषण महत्वपूर्ण है। यूक्रेन युद्ध ने रूस की रक्षा उत्पादन क्षमता और अंतरराष्ट्रीय आपूर्ति व्यवस्था को प्रभावित किया, जिससे भारत के सामने रक्षा क्षेत्र में विविधीकरण की आवश्यकता भी उभरी। यह अध्ययन भारत की सामरिक स्वायत्तता और राष्ट्रीय सुरक्षा को समझने में उपयोगी हो सकता है। वास्तविक निष्कर्षों के लिए मूल शोध पत्र का अवलोकन आवश्यक है।
4. यानिक स्टीफन पोपोएट (2025): 'यूक्रेन-रूस युद्ध के बीच रूस और पश्चिमी देशों के बीच संबंध', यानिक स्टीफन पोपोएट के इस शोध विषय का केंद्र रूस और पश्चिमी देशों के बीच संबंधों में आए बदलाव हैं। यूक्रेन युद्ध के कारण रूस और अमेरिका तथा यूरोपीय देशों के बीच राजनीतिक तनाव, आर्थिक प्रतिबंध और कूटनीतिक मतभेद बढ़े। पश्चिमी देशों

द्वारा यूक्रेन को सैन्य एवं आर्थिक सहायता देने से संघर्ष की अंतरराष्ट्रीय प्रकृति और अधिक स्पष्ट हुई। दूसरी ओर, रूस ने पश्चिमी देशों की नीतियों का विरोध करते हुए वैकल्पिक अंतरराष्ट्रीय साझेदारियों को महत्त्व दिया। यह अध्ययन वैश्विक शक्ति संतुलन और अंतरराष्ट्रीय कूटनीति को समझने में उपयोगी हो सकता है। वास्तविक निष्कर्षों के लिए मूल शोध पत्र की जाँच आवश्यक है।

5. बोनिकोव्सका (डी), मल्गोरजाता (2025): 'यूक्रेन में युद्ध पर भारत और चीन एक तुलनात्मक विश्लेषण', बोनिकोव्सका और मल्गोरजाता (2025) का यह शोध पत्र वर्ष 2022 से 2024 के बीच यूक्रेन युद्ध के संबंध में भारतीय और चीनी मीडिया द्वारा प्रस्तुत प्रमुख आख्यानों का तुलनात्मक विश्लेषण करता है। इसमें यह समझने का प्रयास किया गया है कि दोनों देशों के मीडिया ने रूस-यूक्रेन युद्ध, पश्चिमी देशों की भूमिका तथा अंतरराष्ट्रीय राजनीति को किस प्रकार प्रस्तुत किया। भारतीय मीडिया में भारत के राष्ट्रीय हितों, रणनीतिक स्वायत्तता और रूस के साथ ऐतिहासिक संबंधों पर ध्यान दिया जा सकता है, जबकि चीनी मीडिया में पश्चिमी देशों की नीतियों और वैश्विक शक्ति संतुलन को महत्त्व दिया जा सकता है। यह अध्ययन दोनों देशों की विदेश नीति और मीडिया दृष्टिकोण को समझने में सहायक है।

भारत-रूस संबंधों के रणनीतिक क्षेत्र ऊर्जा सहयोग:

भारत और रूस के द्विपक्षीय संबंधों में ऊर्जा सहयोग एक अत्यंत महत्वपूर्ण रणनीतिक क्षेत्र है। विशेष रूप से रूस-यूक्रेन युद्ध के बाद ऊर्जा सुरक्षा, कच्चे तेल की उपलब्धता और अंतरराष्ट्रीय बाजार में कीमतों में उतार-चढ़ाव ने भारत की विदेश नीति तथा आर्थिक रणनीति को प्रभावित किया है। भारत विश्व के प्रमुख तेल उपभोक्ता देशों में से एक है। तेजी से बढ़ती अर्थव्यवस्था, औद्योगिक विकास, परिवहन क्षेत्र के विस्तार और बढ़ती ऊर्जा आवश्यकताओं के कारण भारत के लिए किफायती एवं विश्वसनीय ऊर्जा आपूर्ति सुनिश्चित करना आवश्यक है। अंतरराष्ट्रीय मुद्रा कोष (फंड, 2023) के आर्थिक परिप्रेक्ष्य तथा अन्य उपलब्ध अध्ययनों के अनुसार, ऊर्जा की कीमतों में वृद्धि का प्रभाव महँगाई, उत्पादन लागत और आर्थिक विकास पर पड़ सकता है।

रूस-यूक्रेन युद्ध के आरंभ होने के बाद वैश्विक ऊर्जा बाजार में व्यापक अस्थिरता उत्पन्न हुई। पश्चिमी देशों द्वारा रूस पर लगाए गए आर्थिक प्रतिबंधों तथा रूसी ऊर्जा निर्यात पर लगाए गए विभिन्न प्रतिबंधों के कारण अंतरराष्ट्रीय तेल व्यापार की दिशा में बदलाव आया। इस परिस्थिति में भारत ने अपने राष्ट्रीय हितों को ध्यान में रखते हुए रूस से रियायती कीमतों पर कच्चा तेल खरीदना बढ़ाया। द टाइम्स ऑफ इंडिया (2023) में प्रकाशित जानकारी के अनुसार, दिसंबर 2022 में भारत ने लगभग 1.44 अरब अमेरिकी डॉलर मूल्य का रूसी कच्चा तेल आयात किया था। इस परिवर्तन ने भारत को रूस के प्रमुख तेल खरीदारों में शामिल कर दिया और भारत की ऊर्जा आयात रणनीति में एक महत्वपूर्ण बदलाव को प्रदर्शित किया।

भारत द्वारा रूसी कच्चे तेल का आयात बढ़ाने के पीछे कई आर्थिक और रणनीतिक कारण थे। पहला, रियायती कीमतों पर तेल प्राप्त करने से भारत को अपने आयात बिल को नियंत्रित करने में सहायता मिली। दूसरा, इससे घरेलू बाजार में पेट्रोलियम उत्पादों की आपूर्ति बनाए रखने तथा परिवहन, कृषि और औद्योगिक क्षेत्रों की ऊर्जा आवश्यकताओं को पूरा करने में मदद मिली। तीसरा, अंतरराष्ट्रीय बाजार में कच्चे तेल की कीमतों में उतार-चढ़ाव के दौरान विविध स्रोतों से तेल प्राप्त करना भारत की ऊर्जा सुरक्षा के लिए उपयोगी रहा। भारत जैसे विकासशील देश के लिए ऊर्जा की कीमतों में अत्यधिक वृद्धि चालू खाते के घाटे, विदेशी मुद्रा भंडार पर दबाव तथा घरेलू महँगाई को प्रभावित कर सकती है। इसलिए रूसी तेल की खरीद को भारत की आर्थिक स्थिरता और राष्ट्रीय हितों से जुड़ी व्यावहारिक नीति के रूप में देखा जा सकता है।

भारत-रूस ऊर्जा संबंध केवल कच्चे तेल के आयात तक सीमित नहीं हैं, बल्कि इनमें तेल शोधन, पेट्रोलियम उत्पादों के निर्यात, प्राकृतिक गैस, परमाणु ऊर्जा और दीर्घकालिक ऊर्जा निवेश की संभावनाएँ भी शामिल हैं। भारत के पास विकसित तेल शोधन क्षमता है, जिसके माध्यम से आयातित कच्चे तेल को पेट्रोल, डीजल और अन्य पेट्रोलियम उत्पादों में परिवर्तित किया जाता है। इन उत्पादों की घरेलू खपत के साथ-साथ कुछ मात्रा का अंतरराष्ट्रीय बाजारों में निर्यात भी किया जाता है। इस प्रकार भारत अपनी घरेलू ऊर्जा आवश्यकताओं को पूरा करने के साथ-साथ वैश्विक पेट्रोलियम आपूर्ति शृंखला में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। हालांकि, इस व्यापार के आर्थिक लाभों का मूल्यांकन करते समय परिवहन लागत, बीमा, भुगतान व्यवस्था, अंतरराष्ट्रीय प्रतिबंधों और बाजार की परिस्थितियों को भी ध्यान में रखना आवश्यक है।

रूस से ऊर्जा आयात में वृद्धि ने भारत की विदेश नीति में रणनीतिक स्वायत्तता के महत्व को भी उजागर किया है। भारत ने एक ओर रूस के साथ अपने ऐतिहासिक राजनीतिक, आर्थिक और रक्षा संबंधों को बनाए रखा, वहीं दूसरी ओर अमेरिका तथा यूरोपीय देशों के साथ अपने व्यापारिक और रणनीतिक सहयोग को भी जारी रखा। भारत की नीति का प्रमुख उद्देश्य किसी एक शक्ति-गुट पर पूर्ण निर्भरता से बचते हुए अपने राष्ट्रीय हितों के अनुसार निर्णय लेना रहा है। ऊर्जा के क्षेत्र में यह दृष्टिकोण विशेष रूप से स्पष्ट दिखाई देता है, क्योंकि भारत को किफायती ऊर्जा की आवश्यकता और प्रमुख पश्चिमी देशों के साथ अपने संबंधों के बीच संतुलन बनाए रखना पड़ता है।

भारत-रूस संबंधों की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि:

भारत और रूस के संबंधों का इतिहास बीसवीं शताब्दी के प्रारंभिक वर्षों से जुड़ा हुआ है। वर्ष 1900 में मुंबई में रूसी वाणिज्य दूतावास की स्थापना दोनों देशों के औपचारिक संपर्कों के विकास में एक महत्वपूर्ण घटना मानी जाती है। भारत की स्वतंत्रता से पहले ही रूस के राजनीतिक विचारों और साम्राज्यवाद-विरोधी दृष्टिकोण का प्रभाव भारतीय राजनीतिक चिंतन के कुछ वर्गों पर पड़ा। वर्ष 1947 में स्वतंत्रता प्राप्त करने के बाद भारत ने विभिन्न देशों के साथ संबंध विकसित किए, जिनमें सोवियत संघ की भूमिका विशेष रूप से महत्वपूर्ण रही।

शीत युद्ध के दौरान भारत और सोवियत संघ के बीच राजनीतिक, आर्थिक और सैन्य सहयोग में उल्लेखनीय वृद्धि हुई। दोनों देशों के बीच उपनिवेशवाद-विरोध, राष्ट्रीय संप्रभुता और स्वतंत्र विकास जैसे विषयों पर कुछ समानताएँ थीं। भारत ने गुटनिरपेक्षता की नीति अपनाई, जबकि सोवियत संघ के साथ उसके संबंध रक्षा आवश्यकताओं, औद्योगिक विकास और तकनीकी सहयोग से प्रेरित थे। सोवियत संघ ने भारत के औद्योगीकरण, भारी उद्योगों की स्थापना तथा वैज्ञानिक विकास में योगदान दिया। इसके अतिरिक्त, सैन्य उपकरणों की आपूर्ति और तकनीकी सहायता ने भारत की रक्षा क्षमताओं को विकसित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

वर्ष 1971 में भारत और सोवियत संघ के बीच शांति, मैत्री और सहयोग संधि पर हस्ताक्षर किए गए। इस संधि ने दोनों देशों के रणनीतिक संबंधों को अधिक मजबूती प्रदान की। सोवियत संघ ने भारत के रक्षा क्षेत्र में सहयोग किया और अंतरिक्ष अनुसंधान तथा वैज्ञानिक विकास में भी महत्वपूर्ण योगदान दिया। इन गतिविधियों से दोनों देशों के बीच दीर्घकालिक विश्वास विकसित हुआ, जिसने भविष्य में द्विपक्षीय सहयोग के लिए आधार तैयार किया।

वर्ष 1991 में सोवियत संघ के विघटन के बाद रूस एक स्वतंत्र राज्य के रूप में उभरा। इसके बावजूद भारत और रूस ने अपने पारंपरिक संबंधों को बनाए रखा। वर्ष 1993 में दोनों देशों ने मैत्री और सहयोग संधि पर हस्ताक्षर किए, जबकि वर्ष 2000 में रणनीतिक साझेदारी की घोषणा की गई। आगे चलकर रक्षा सहयोग, परमाणु ऊर्जा, तेल आयात, व्यापार और तकनीकी विकास दोनों देशों के संबंधों के प्रमुख क्षेत्र बने। रूस भारत के लिए रक्षा उपकरणों का एक महत्वपूर्ण आपूर्तिकर्ता रहा है, जबकि ऊर्जा सहयोग ने दोनों देशों के आर्थिक संबंधों को नया आयाम प्रदान किया है।

रूस-यूक्रेन युद्ध के संदर्भ में भारत-रूस संबंधों की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि विशेष रूप से प्रासंगिक है। भारत ने रूस के साथ अपने पुराने रक्षा और आर्थिक संबंधों को ध्यान में रखते हुए कूटनीतिक संवाद तथा शांतिपूर्ण समाधान पर बल दिया। साथ ही, भारत ने अमेरिका और यूरोपीय देशों के साथ अपने संबंधों को भी जारी रखा। यह दृष्टिकोण भारत की रणनीतिक स्वायत्तता को दर्शाता है, जिसके अंतर्गत वह अपने राष्ट्रीय हितों के अनुसार स्वतंत्र निर्णय लेने का प्रयास करता है।

निष्कर्षतः, भारत-रूस संबंध ऐतिहासिक विश्वास, रक्षा सहयोग, आर्थिक हितों और कूटनीतिक साझेदारी पर आधारित हैं। बदलती वैश्विक परिस्थितियों के बावजूद दोनों देशों ने अपने संबंधों को बनाए रखा है। रूस-यूक्रेन युद्ध ने भारत की विदेश नीति में संतुलन, राष्ट्रीय हितों और बहुपक्षीय सहयोग के महत्त्व को और अधिक स्पष्ट किया है।

रक्षा एवं सुरक्षा:

रूस-यूक्रेन युद्ध ने रूसी रक्षा उत्पादन, सैन्य उपकरणों की उपलब्धता और वैश्विक आपूर्ति शृंखलाओं की कुछ सीमाओं को उजागर किया है। इसके बावजूद भारत के लिए रूसी रक्षा प्रणालियाँ महत्वपूर्ण बनी हुई हैं, क्योंकि भारतीय सेना के पास इन प्रणालियों का व्यापक भंडार है और इनके रखरखाव के लिए आवश्यक तकनीकी ढाँचा पहले से मौजूद है। विशेष रूप से वास्तविक नियंत्रण रेखा (र।ब) के निकट सुरक्षा चुनौतियों के मद्देनजर भारत के लिए सैन्य उपकरणों की निरंतर उपलब्धता और परिचालन तत्परता बनाए रखना आवश्यक है।

हालाँकि, बदलती भू-राजनीतिक परिस्थितियों को ध्यान में रखते हुए भारत अपने रक्षा आयात के स्रोतों में विविधता भी ला रहा है। इसके अंतर्गत अमेरिका, फ्रांस और इजराइल जैसे देशों से आधुनिक रक्षा तकनीक तथा सैन्य उपकरण प्राप्त करने पर ध्यान दिया जा रहा है। इस दोहरी रणनीति का उद्देश्य रूस के साथ पुराने रक्षा संबंधों को बनाए रखते हुए किसी एक देश पर अत्यधिक निर्भरता कम करना है। इस प्रकार भारत अपनी रक्षा आवश्यकताओं, तकनीकी आधुनिकीकरण और रणनीतिक स्वायत्तता के बीच संतुलन स्थापित करने का प्रयास कर रहा है।

व्यापार एवं आर्थिक सहयोग:

रूस-यूक्रेन युद्ध ने वैश्विक व्यापार, ऊर्जा बाजार और अंतरराष्ट्रीय आपूर्ति शृंखलाओं को प्रभावित किया है। आर्थिक प्रतिबंधों, परिवहन संबंधी बाधाओं और भुगतान व्यवस्थाओं में आए बदलावों ने विभिन्न देशों के व्यापारिक संबंधों को नई परिस्थितियों के अनुरूप ढालने की आवश्यकता उत्पन्न की। भारत ने इस दौरान अपने आर्थिक हितों को ध्यान में रखते हुए विभिन्न देशों के साथ व्यापारिक संबंध बनाए रखने तथा नए बाजारों की संभावनाएँ तलाशने पर ध्यान दिया। रूस के साथ व्यापार भी इस रणनीति का एक महत्वपूर्ण हिस्सा बना रहा।

भारत और रूस के बीच व्यापारिक सहयोग मुख्यतः ऊर्जा, रक्षा उपकरण, उर्वरक, औषधियों, मशीनरी और तकनीकी क्षेत्रों तक फैला हुआ है। रूस से कच्चे तेल का आयात बढ़ने से दोनों देशों के ऊर्जा व्यापार को विशेष महत्त्व मिला। भारत के लिए अपेक्षाकृत कम कीमतों पर ऊर्जा प्राप्त करना आर्थिक दृष्टि से उपयोगी रहा, जबकि रूस को अपने ऊर्जा निर्यात के लिए वैकल्पिक बाजार प्राप्त हुए। इसके अतिरिक्त, भारत की औषधि और अन्य औद्योगिक वस्तुओं के निर्यात से द्विपक्षीय व्यापार के विस्तार की संभावनाएँ बनी हैं। भारत-रूस व्यापार के सामने भुगतान संबंधी कठिनाइयाँ, मुद्रा विनिमय की समस्याएँ, परिवहन लागत और अंतरराष्ट्रीय प्रतिबंधों से जुड़े जोखिम भी मौजूद हैं। इन चुनौतियों के कारण दोनों देशों को व्यापारिक भुगतान के वैकल्पिक तरीकों, परिवहन संपर्कों और आर्थिक सहयोग के नए माध्यमों पर विचार करना पड़ता है। भारत के लिए यह आवश्यक है कि वह रूस के साथ व्यापार जारी रखते हुए अपने अन्य प्रमुख व्यापारिक साझेदारों के साथ भी संबंध मजबूत करे। इस प्रकार भारत-रूस आर्थिक सहयोग वैश्विक अनिश्चितताओं के बीच व्यापारिक विविधीकरण और आर्थिक हितों की सुरक्षा का महत्वपूर्ण उदाहरण प्रस्तुत करता है।

भारत-रूस संबंधों की बदलती गतिशीलता: यूक्रेन युद्ध के संदर्भ:

भारत और रूस के संबंध लंबे समय से ऐतिहासिक विश्वास, रक्षा सहयोग, आर्थिक हितों तथा कूटनीतिक साझेदारी पर आधारित रहे हैं। शीत युद्ध के दौरान भारत और सोवियत संघ के बीच विकसित हुए संबंधों ने भारत के औद्योगिक विकास, सैन्य आधुनिकीकरण और वैज्ञानिक प्रगति में महत्वपूर्ण योगदान दिया। वर्ष 1991 में सोवियत संघ के विघटन के बाद भी भारत और रूस ने अपने पारंपरिक संबंधों को बनाए रखा। वर्ष 2000 में दोनों देशों ने रणनीतिक साझेदारी स्थापित की, जिसे 2010 में विशेष और विशेषाधिकार प्राप्त रणनीतिक साझेदारी के स्तर तक उन्नत किया गया। हालांकि, फरवरी 2022 में रूस-यूक्रेन युद्ध शुरू होने के बाद अंतरराष्ट्रीय राजनीति में हुए परिवर्तनों ने भारत-रूस संबंधों की प्रकृति और दिशा को नए सिरे से प्रभावित किया है।

रूस-यूक्रेन युद्ध के बाद भारत-रूस संबंधों में ऊर्जा सहयोग का महत्व काफी बढ़ गया। भारत अपनी बढ़ती ऊर्जा आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए कच्चे तेल के आयात पर निर्भर है। वैश्विक बाजार में तेल की कीमतों में उतार-चढ़ाव और रूस पर लगाए गए पश्चिमी प्रतिबंधों के बीच भारत ने रियायती कीमतों पर रूसी कच्चे तेल का आयात बढ़ाया। इससे भारत को ऊर्जा लागत नियंत्रित करने और घरेलू आर्थिक आवश्यकताओं को पूरा करने में सहायता मिली। दूसरी ओर, रूस को अपने ऊर्जा निर्यात के लिए वैकल्पिक बाजार प्राप्त हुआ। इस प्रकार ऊर्जा व्यापार दोनों देशों के आर्थिक संबंधों का एक महत्वपूर्ण आधार बनकर उभरा। फिर भी, भुगतान व्यवस्था, अंतरराष्ट्रीय प्रतिबंधों और परिवहन संबंधी चुनौतियों ने इस सहयोग को जटिल बनाया है।

रक्षा एवं सुरक्षा के क्षेत्र में भी रूस भारत का एक महत्वपूर्ण साझेदार बना हुआ है। भारतीय सशस्त्र बलों में रूसी मूल के लड़ाकू विमानों, टैंकों, मिसाइल प्रणालियों और अन्य सैन्य उपकरणों का व्यापक उपयोग होता है। यूक्रेन युद्ध ने रूस की रक्षा उत्पादन क्षमता और सैन्य आपूर्ति व्यवस्था से जुड़ी कुछ चुनौतियों को उजागर किया है। इसके बावजूद भारत के लिए रूसी रक्षा उपकरणों का रखरखाव, तकनीकी सहायता और स्पेयर पार्ट्स की उपलब्धता महत्वपूर्ण बनी हुई है। साथ ही, भारत अमेरिका, फ्रांस और इजराइल जैसे देशों से रक्षा सहयोग बढ़ाकर अपने आयात स्रोतों में विविधता लाने का प्रयास कर रहा है। इससे स्पष्ट होता है कि भारत पुराने रक्षा संबंधों को बनाए रखते हुए अपनी दीर्घकालिक सुरक्षा आवश्यकताओं के अनुरूप नई रणनीतियाँ अपना रहा है।

यूक्रेन युद्ध ने भारत की विदेश नीति में रणनीतिक स्वायत्तता के महत्व को भी उजागर किया है। भारत ने रूस के साथ अपने संबंध बनाए रखे हैं, जबकि अमेरिका और यूरोपीय देशों के साथ व्यापार, तकनीक तथा सुरक्षा सहयोग का विस्तार भी किया है। भारत ने युद्ध के समाधान के लिए संवाद, कूटनीति और शांतिपूर्ण वार्ता पर बल दिया है। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की जुलाई 2024 में रूस और अगस्त 2024 में यूक्रेन की यात्राएँ इस संतुलित कूटनीतिक दृष्टिकोण के महत्वपूर्ण उदाहरण हैं। भारत की नीति का उद्देश्य विभिन्न पक्षों के साथ संवाद बनाए रखते हुए अपने राष्ट्रीय हितों की रक्षा करना है।

आर्थिक दृष्टि से भी भारत-रूस संबंधों में बदलाव दिखाई देता है। ऊर्जा व्यापार में वृद्धि के बावजूद दोनों देशों के बीच व्यापार संतुलन, भुगतान की व्यवस्था, परिवहन लागत और व्यापारिक विविधीकरण जैसी चुनौतियाँ मौजूद हैं। भारत रूस के साथ व्यापार बढ़ाने के साथ-साथ अन्य देशों के साथ आर्थिक संबंध मजबूत करने पर भी ध्यान दे रहा है। ब्रिक्स और संयुक्त राष्ट्र जैसे बहुपक्षीय मंचों पर सहयोग दोनों देशों को वैश्विक आर्थिक तथा राजनीतिक मुद्दों पर संवाद का अवसर प्रदान करता है।

अंत निष्कर्षतः, रूस-यूक्रेन युद्ध ने भारत-रूस संबंधों को समाप्त करने के बजाय उनकी प्राथमिकताओं और कार्यप्रणाली में परिवर्तन उत्पन्न किया है। ऊर्जा और रक्षा सहयोग अब भी संबंधों के प्रमुख आधार हैं, लेकिन भारत अपनी आर्थिक

आवश्यकताओं, सुरक्षा हितों और वैश्विक जिम्मेदारियों के बीच संतुलन बनाने का प्रयास कर रहा है। भविष्य में इन संबंधों की दिशा इस बात पर निर्भर करेगी कि दोनों देश बदलती अंतरराष्ट्रीय परिस्थितियों, आर्थिक चुनौतियों और रणनीतिक आवश्यकताओं के अनुरूप सहयोग को किस प्रकार विकसित करते हैं।

संदर्भ ग्रंथ सूची:

1. चौथम हाउस (2024, अक्टूबर)। यूक्रेन संकट के बाद भारत-रूस संबंध।
<https://www.chathamhouse.org/2024/10/india-russia-relations>
2. इंटरनेशनल क्राइसिस ग्रुप (2023)। यूक्रेन में रूस के युद्ध के प्रति भारत की प्रतिक्रिया।
<https://www.crisisgroup.org/asia-pacific/india/indias-resp7>
3. चौथम हाउस (2024, अक्टूबर)। यूक्रेन संकट के बाद भारत-रूस संबंध <https://www.chathamhouse.org/2024/10/india-russia-relationsonse-russias-war-ukraine>
4. सेंटर फॉर स्ट्रैटेजिक एंड इंटरनेशनल स्टडीज़ (CSIS) (2022)। हथियार और तेल रूस-भारत संबंधों में निरंतरता और परिवर्तन। <https://www.csis.org/analysis/guns-and-oil-continuity-and-change-russia-india-relations>
5. जीआरएम इंस्टीट्यूट (2023)। रूस-यूक्रेन संकट का भारतीय व्यवसायों और अर्थव्यवस्था पर प्रभाव।
<https://grm.institute/blog/russia-ukraine-crisis-impact-on-indian-businesses-economy/>
6. इंडियाज़ वर्ल्ड (2023)। हथियार और तेल रूस-भारत संबंधों में निरंतरता और परिवर्तन—एक समीक्षा।
<https://indiasworld.in/guns-and-oil-continuity-and-change-russia-india-relations-a-review/>
7. विदेश मंत्रालय (MEA) (2022)। यूक्रेन युद्ध के दौरान भारत की भूमिका। भारत सरकार, विदेश मंत्रालय।
<https://www.mea.gov.in/rajyasabha.htm?dtl/35022/QUESTION+NO230+INDIAS+ROLE+DURING>
8. मेनन, एस. (2023)। भारत और एशियाई भू-राजनीति: अतीत और वर्तमान। हार्परकॉल्लिन्स।
9. एनपीआर (2023, 20 फरवरी)। रूस-भारत संबंध, तेल, मोदी और पुतिन।
<https://www.npr.org/2023/02/20/1156478956/russia-india-relations-oil-modi-putin>
10. पांडे, ए. (2023)। भारतीय रक्षा खरीद और रूसी हथियार: एक विश्लेषण। हडसन इंस्टीट्यूट।
11. राजगोपालन, आर. पी. (2023)। भारत-रूस संबंधों पर ऑब्जर्वर रिसर्च फाउंडेशन की टिप्पणी।
<https://www.orfonline.org>
12. सिधु, डब्ल्यू. पी. (2025)। भारत के हथियार निर्यात का इतिहास और रणनीतिक निगरानी। ग्लोबल सिक्योरिटी जर्नल।
13. टाइम्स ऑफ इंडिया (2023)। युद्ध शुरू होने के बाद भारत ने रूस से 1.44 अरब अमेरिकी डॉलर मूल्य का कच्चा तेल आयात किया। <https://timesofindia.indiatimes.com/business/india-business/russia-oil-trade-india-imported-144-billion-worth-of-crude-since-start-of-ukraine-war-second-largest-buyer-after-china/articleshow/126376325.cms>

13. Chatham House. (2024, October). India-Russia relations after the Ukraine crisis. <https://www.chathamhouse.org/2024/10/india-russia-relations>
14. Crisis Group. (2023). India's response to Russia's war in Ukraine. <https://www.crisisgroup.org/asia-pacific/india/indias-response-russias-war-ukraine>
15. CSIS. (2022). Guns and oil: Continuity and change in Russia-India relations. Center for
16. Strategic and International Studies. <https://www.csis.org/analysis/guns-and-oil-continuity-and-change-russia-india-relations>
17. GRM Institute. (2023). Russia-Ukraine crisis impact on Indian businesses & economy. <https://grm.institute/blog/russia-ukraine-crisis-impact-on-indian-businesses-economy/>
18. India's World. (2023). Guns and oil: Continuity and change in Russia-India relations. <https://indiasworld.in/guns-and-oil-continuity-and-change-in-russia-india-relations-a-review/>
19. MEA. (2022). India's role during Ukraine war. Ministry of External Affairs. <https://www.mea.gov.in/rajya-sabha.htm?dtl/35022/QUESTION+NO230+INDIAS+ROLE+DURING>
20. Menon, S. (2023). India and Asian geopolitics: The past and present. HarperCollins. NPR. (2023, February 20). Russia-India relations, oil, Modi, Putin. NPR.
21. <https://www.npr.org/2023/02/20/1156478956/russia-india-relations-oil-modi-putin>
22. Pande, A. (2023). Indian defense procurement and Russian weapons: Analysis. Hudson Institute.
23. Rajagopalan, R. P. (2023). Observer Research Foundation commentary on India-Russia relations. <https://www.orfonline.org>
24. Sidhu, W. P. (2025). India's arms export history and strategic oversight. Global Security Journal.
25. Times of India. (2023). India imported \$1.44 billion worth of crude from Russia since start of war. Ukraine <https://timesofindia.indiatimes.com/business/india-Times-of-India-business/russia-oil-trade-india-imported-144-billion-worth-of-crude-since-start-of-ukraine-war-second-largest-buyer-after-china/articleshow/126376325.cms>

Cite the Article:

प्रीति, दर्शन. प्रोफेसर राम. (2026). भारत-रूस संबंधों की बदलती गतिशीलता: यूक्रेन युद्ध के संदर्भ में. *The Research Dialogue*, 5(3), 168–176. DOI: <https://doi.org/10.64880/theresearchdialogue.v5i3.19>

Disclaimer: The views, opinions, interpretations, analyses, conclusions, recommendations, and statements expressed in this research article are solely those of the author(s) and do not necessarily represent the views, policies, or positions of the Publisher, Chief Editor, Editors, Editorial Board, Reviewers, or their affiliated institutions. The author(s) bear full responsibility for the originality, accuracy, authenticity, and integrity of the manuscript and for ensuring compliance with applicable academic and ethical standards, including those relating to plagiarism, AI-generated or AI-assisted content, copyright infringement, data fabrication or falsification, and other forms of research or academic misconduct.